

10.10.2020

S.N. PADI-1  
Economics (Hons.)

Dr. Bipin Kumar

Prof. IN-CLASS

R.R.S. College, Meerut

OCTOBER 2020

Paper-1 (Micro Economics)

PP, Patna

25

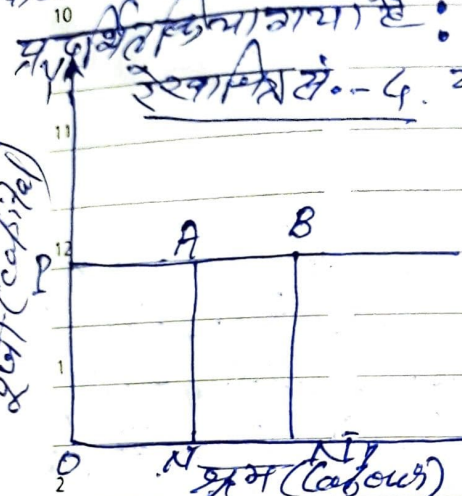
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18  
19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

Characteristics of Iso-Product curves

SEPTEMBER, FRIDAY

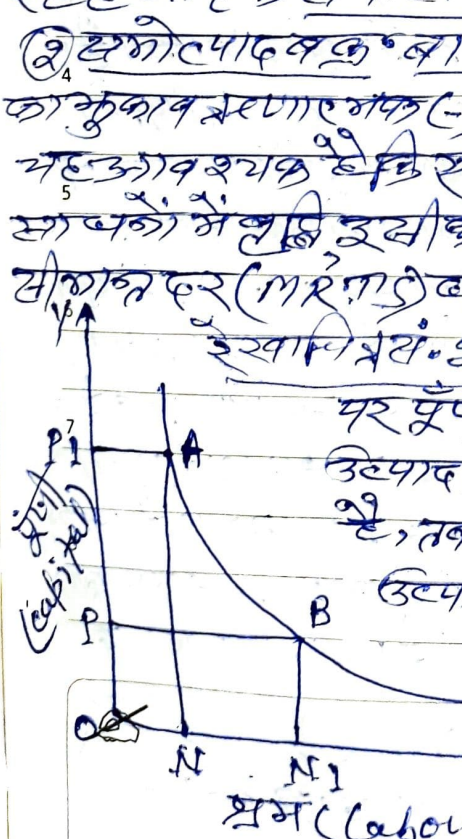
Ques: समोत्पाद वक्र की प्रमुख विशेषताओं की कम्ती से दो प्रत्येक प्रश्न के संदर्भ में लिखिए।  
उत्तर: समोत्पाद वक्र की प्रमुख विशेषताओं की कम्ती से दो:

① समोत्पाद वक्र 'सीटीपी' चमकी होता: 'समोत्पाद वक्र' की आकृति के बारे में यह कहा जाता है कि वह 'x-axis' के समानान्तर चमकी होगी। इसे रेखाचित्र सं-4 में प्रदर्शित किया गया है:



रेखाचित्र सं-4. यह रेखाचित्र सं-4 में IR एक समोत्पाद वक्र की आकृति है जिस पर A संयोग यह बतलाता है कि पूंजी की मात्रा तथा श्रम की मात्रा के लगे से एक ही उत्पादन प्राप्त होता है। जबकि B संयोग पर पूर्ववत् पूंजी की मात्रा तथा श्रम प्रमलवा के से उत्पादन बढ़ी हुई मात्रा में प्राप्त होता है कारण कि B संयोग पर श्रम की मात्रा अधिक लगायी गयी है। अतः एक समोत्पाद वक्र पर A तथा B संयोग अलग-अलग उत्पादन की दर को बतला रहे हैं जो एक समोत्पाद वक्र की मान्यता के अनुकूल नहीं है।

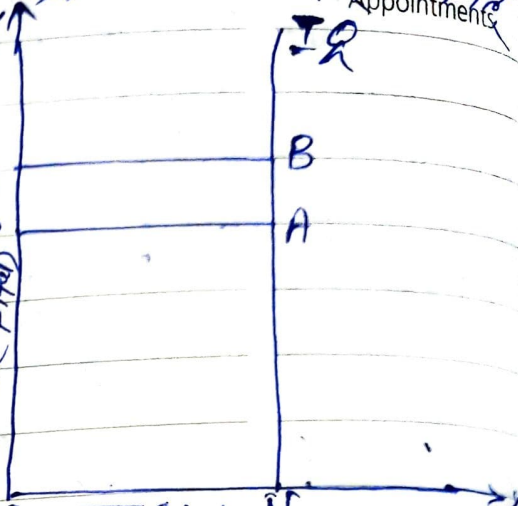
② समोत्पाद वक्र 'बायें-बायें' नीचे की ओर मुका रहता है: समोत्पाद वक्र का मुकाव बरपाए मक (-) होता है। समान उत्पादन के दर को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि एक साधन के उत्तरोत्तर एक की जाय, जबकि दूसरे साधनों में वृद्धि इसी कारण समोत्पाद वक्र में तकनीकी प्रतिस्थापन की को सीमान्त दर (MRTS) बढ़ती हुई होती है, इसे रेखाचित्र सं-5 में दर्शाया गया है:



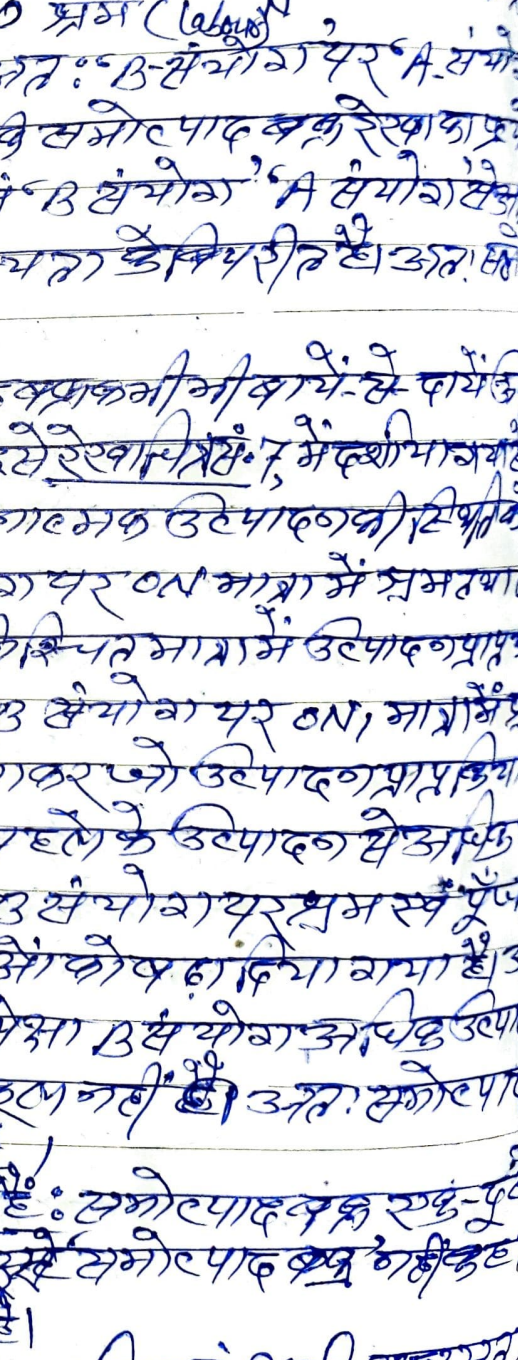
रेखाचित्र सं-5. रेखाचित्र सं-5 में 'x-axis' पर श्रम को 'y-axis' पर पूंजी की मात्रा दिखलायी गई है। चित्र में IR समोत्पाद वक्र है। जब उत्पादन के दर श्रम मात्रा में पूंजी तथा श्रम मात्रा में श्रम लागू था तब उत्पादन का संयोग M बिन्दु पर है। अब इसी संयोग के कारण उत्पादन प्राप्त करने के लिए उत्पादक 'y' पूंजी की मात्रा में कमी तथा 'x' श्रम की मात्रा में वृद्धि कर देता है। अर्थात् OP मात्रा में पूंजी और ON<sub>1</sub> मात्रा में श्रम लागू हो वह B-संयोग को प्राप्त करेगा। इस प्रकार, उद्योग चित्र में PP<sub>1</sub>(Y) में का- जबकि NN<sub>1</sub>(X) में वृद्धि की गयी है। इस प्रकार, IR रेखा का M संयोग स्थित कर के और IR रेखा द्वारा से पारें और बढ़ती हुई आगे की ओर बढ़ जाती है।

③ संयोग के आगया है और IR रेखा द्वारा से पारें और बढ़ती हुई आगे की ओर बढ़ जाती है।

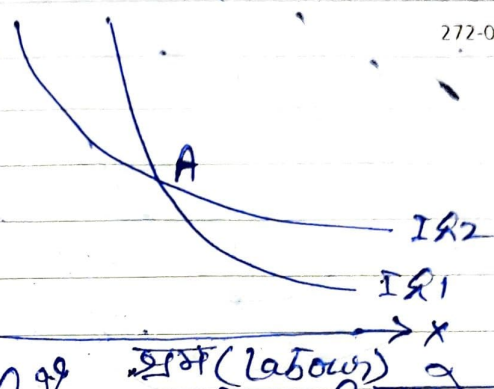
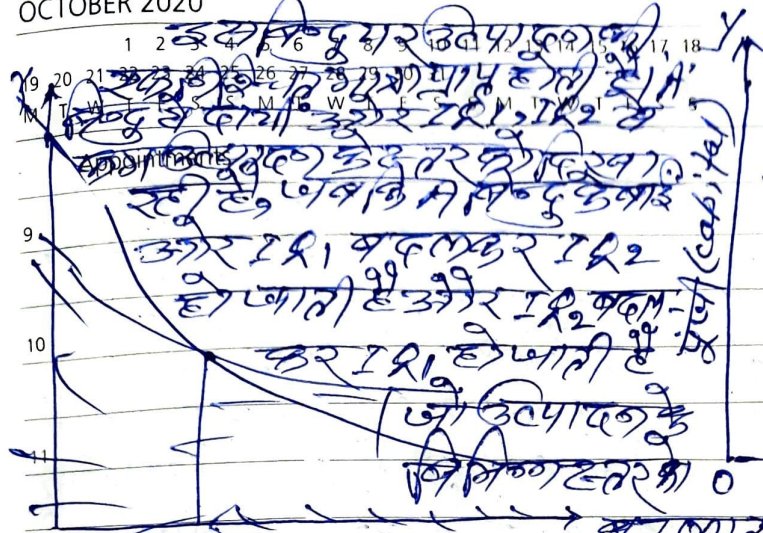
3) समोत्पाद वक्र एकलक्षक नहीं होता: समोत्पाद वक्र  $X$ -अक्ष पर लम्बवत् नहीं होता। इसे रेखाचित्र सं. 6 में दर्शाया गया है।  
 रेखाचित्र सं. 6 में  $IR$  एक खड़ी समोत्पाद वक्र है जो  $X$ -अक्ष पर लम्बवत् नहीं है।  $ON$  मात्रा में प्रथम तथा  $OP$  मात्रा में पूंजी लगाकर ले इस पर  $M$  संयोग प्राप्त किया गया है, जो एक निश्चित उत्पादन के स्तर को बतलाता है। इसी रेखा पर एक  $B$  संयोग भी है। इस संयोग पर  $ON$  मात्रा में प्रथम तथा  $OP$  मात्रा में पूंजी लगायी है। यहाँ यह साफ है कि  $O$  प्रथम (labour)  $B$  संयोग पर पूंजी की मात्रा को बढ़ा दिया है। अतः  $B$  संयोग पर  $A$  संयोग की अपेक्षा उत्पादन अधिक प्राप्त होगा जबकि समोत्पाद वक्र रेखा का प्रथम संयोग लम्बाव उत्पादन देगा, लेकिन चित्र में  $B$  संयोग  $A$  संयोग से अधिक उत्पादन बतलाता है जो समोत्पाद वक्र की मान्यता के विपरीत है। अतः समोत्पाद वक्र का स्कार लम्बवत् नहीं होता।



4) समोत्पाद वक्र धनात्मक ढाल नहीं होता: समोत्पाद वक्र कभी भी कार्य-से कार्य की नहीं करेगा। उचित ढाल का ढाल धनात्मक नहीं होता है। इसे रेखाचित्र सं. 7 में दर्शाया गया है।  
 रेखाचित्र सं. 7 में  $IR$  वक्र धनात्मक ढाल उत्पादन की स्थिति को बतलाता है। वक्र में  $M$  संयोग पर  $ON$  मात्रा में प्रथम तथा  $OP$  मात्रा में पूंजी लगाकर एक निश्चित मात्रा में उत्पादन प्राप्त किया जाता है। उसी वक्र के  $B$  संयोग पर  $ON$  मात्रा में प्रथम तथा  $OP$  मात्रा में पूंजी लगाकर जो उत्पादन प्राप्त किया जा रहा है वह पहले के उत्पादन से अधिक है। इसका कारण  $B$  संयोग पर प्रथम से पूंजी दोनों की ही मात्राओं को बढ़ा दिया गया है। अतः एक ही समोत्पाद वक्र पर  $M$  संयोग की अपेक्षा  $B$  संयोग अधिक उत्पादन देता है जो समोत्पाद वक्र की शर्त के अनुकूल नहीं है। अतः समोत्पाद वक्र धनात्मक ढाल का नहीं होता है।  
 5) समोत्पाद वक्र एक-दूसरे को नहीं काटते हैं: समोत्पाद वक्र एक-दूसरे को नहीं काटेंगे। यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी तो उसे समोत्पाद वक्र नहीं कहा जाएगा। इसे रेखाचित्र सं. 8 में दर्शाया गया है।

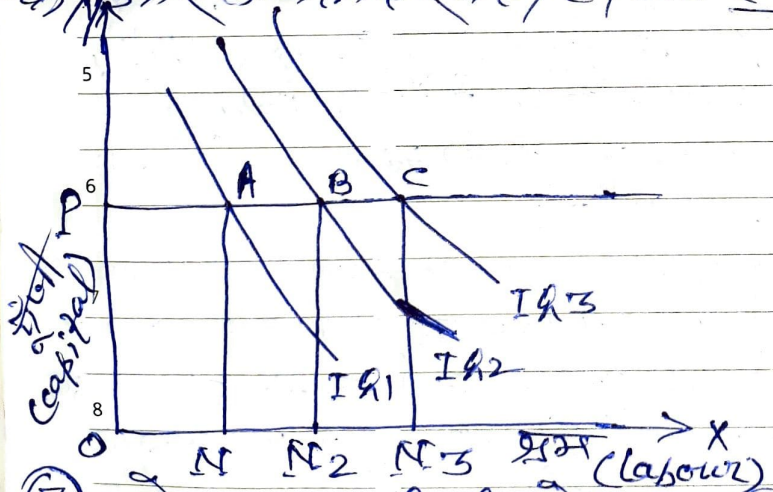


यह स्पष्ट है कि  $IR$  तथा  $IR$  दो समोत्पाद वक्र एक-दूसरे को नहीं काटते हैं।  
 रेखाचित्र सं. 8 की सहायता से यह स्पष्ट है कि  $IR$  तथा  $IR$  दो समोत्पाद वक्र एक-दूसरे को नहीं काटते हैं।



अतः-काला उत्पादन के लिये को नहीं बतलाता बल्कि लोअर को बतलाती है। अतः एक ही समोत्पाद वक्र रेखा के लिये एक-दूसरे को नहीं कोट बतलाती है।

⑥ समोत्पाद वक्र रेखा मूल सिद्धि की ओर उन्मत्त हो रही है (ISO-Convex to the point origin से): समोत्पाद वक्र मूल सिद्धि की ओर उन्मत्त होता है। यहाँ कि जब एक साधन की मात्रा में कमी की जाती है, तो दूसरे साधन की मात्रा को बढ़ा दिया जाता है। अतः अतः में प्रतिस्थापन की प्रवृत्त प्रबल होती है, परन्तु लोअर-लोअर समचयीता जाता है लोअर-लोअर इस दर में घटती जाती है फलस्वरूप समोत्पाद वक्र रेखाएं मूल सिद्धि की ओर उन्मत्त हो रही हैं। इसे रेखागत सं. 9 में देखा जा सकता है।



⑦ समोत्पाद वक्र की सीमा रेखा का रिज रेखा: समोत्पाद वक्र का उच्चतर है। अतः रिज रेखाओं के बीच में उत्पादन के लिए डिप्युक्त है। साधारणतया, समोत्पाद वक्र साधन और वे नीचे की ओर बन्द होते हैं लेकिन उच्चतर के साधन-उत्पाद वक्रों को और लोअर अर्थात् उच्चतर बतलाते हैं। यह स्थिति जब उत्पादन होता है जब एक उत्पादक आवश्यकता से अधिक प्रम अथवा संप्ला या दोनों साधनों का प्रयोग करता है। अतः एक उत्पादक दूर-उत्पाद वक्रों के उन्मत्त अर्थ में उत्पादन निश्चित करेगा जो मूल सिद्धि के प्रति उन्मत्त या 'रिज रेखाओं' (Ridge lines) के बीच स्थित है। इसे हम रेखागत सं. 10 की सहायता से देखा जा सकता है।

OCTOBER NOVEMBER DECEMBER

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30										
M	T	W	T	F	S	M	T	W	T	F	S	M	T	W	T	F	S	M	T

29

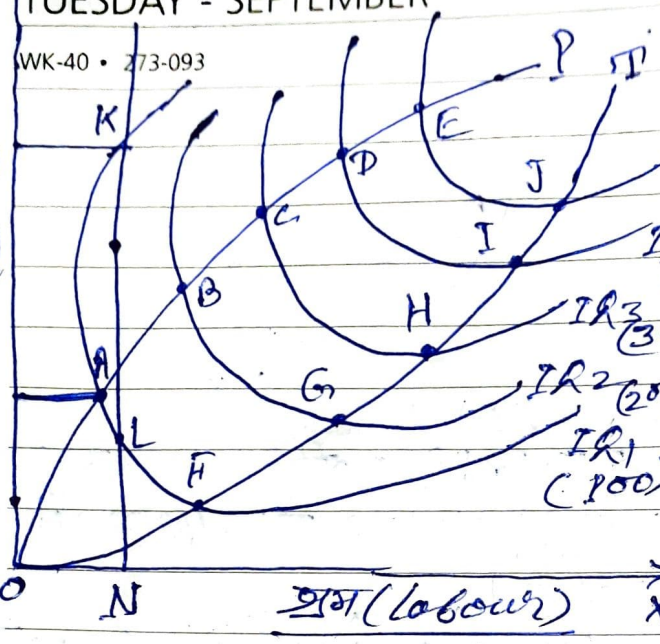
रेखाचित्र संख्या - 10.

TUESDAY - SEPTEMBER

WK-40 • 273-093

पूंजी (Capital)

श्रम (Labour)



यह रेखाचित्र सं. 10 में दर्शाया है।

IR<sub>2</sub>, IR<sub>3</sub>, IR<sub>4</sub> एवं IR<sub>5</sub> के उत्पाद-वक्र हैं। इनमें IR<sub>5</sub> वक्र ही से गुजर सकने का सिद्ध है।  
 IR<sub>1</sub> के A बिन्दु पर पूंजी का अधिकतम मात्रा तथा श्रम की न्यूनतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 IR<sub>2</sub> के B बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 IR<sub>3</sub> के C बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 IR<sub>4</sub> के D बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 IR<sub>5</sub> के E बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।

मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 इस बिन्दु पर उत्पादक IR<sub>1</sub> के A बिन्दु पर पूंजी का अधिकतम मात्रा तथा श्रम की न्यूनतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।

अब हम IR<sub>1</sub> के A बिन्दु की क्या दिशा में बढ़ेंगे।  
 यदि हम IR<sub>1</sub> के A बिन्दु पर पूंजी का अधिकतम मात्रा तथा श्रम की न्यूनतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 अब हम IR<sub>2</sub> के B बिन्दु की क्या दिशा में बढ़ेंगे।  
 यदि हम IR<sub>2</sub> के B बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 अब हम IR<sub>3</sub> के C बिन्दु की क्या दिशा में बढ़ेंगे।  
 यदि हम IR<sub>3</sub> के C बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 अब हम IR<sub>4</sub> के D बिन्दु की क्या दिशा में बढ़ेंगे।  
 यदि हम IR<sub>4</sub> के D बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 अब हम IR<sub>5</sub> के E बिन्दु की क्या दिशा में बढ़ेंगे।  
 यदि हम IR<sub>5</sub> के E बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।

इसी प्रकार, यदि उत्पादक IR<sub>1</sub> के A बिन्दु से आगे किसी अन्य बिन्दु पर उत्पादक डरता है तो श्रम का अधिकतम मात्रा तथा श्रम का न्यूनतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 IR<sub>1</sub> का डेरल M<sub>1</sub> का जो मूल बिन्दु के प्रति उल्लेखित है।  
 इस प्रकार, श्रम-उत्पादक को व्याख्या की जा सकती है।  
 अतः इससे यह साफ होता है कि पूरे बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 इस प्रकार, श्रम-उत्पादक को व्याख्या की जा सकती है।  
 अतः इससे यह साफ होता है कि पूरे बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।  
 इस प्रकार, श्रम-उत्पादक को व्याख्या की जा सकती है।  
 अतः इससे यह साफ होता है कि पूरे बिन्दु पर पूंजी का न्यूनतम मात्रा तथा श्रम का अधिकतम मात्रा का प्रयोग करके पैदा की जा सकती है।